

विंध्य की प्राचीन धरोहर: रीवा की वनवासी सभ्यताएँ, राजवंश एवं सांस्कृतिक संगम
शोध एवं संपादन: आचार्य आशीष मिश्र

भारत के हृदय में बसा मध्य प्रदेश का रीवा संभाग, अपनी विंध्याचल पर्वत श्रृंखला की मनमोहक सुंदरता और गहरे ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है। यह क्षेत्र महज़ एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि हजारों वर्षों से बहती भारतीय सभ्यता की एक जीती-जागती धारा है। इसका इतिहास प्रागैतिहासिक काल के धुंधलके से शुरू होकर विभिन्न राजवंशों के उत्थान-पतन और एक समृद्ध बहु-सांस्कृतिक विरासत तक फैला हुआ है। यह लेख रीवा के इसी प्रारंभिक काल, इसकी गहन वनवासी सभ्यताओं, प्राचीन राजवंशों के अमूल्य योगदान, और उस सांस्कृतिक ताने-बाने का विश्लेषण करता है जिसने बघेलों के आगमन से पहले इस क्षेत्र को समृद्ध किया।

(यहां रीवा और बघेलखंड क्षेत्र का एक ऐतिहासिक मानचित्र देखा जा सकता है, जिसमें प्रमुख पुरातात्विक स्थल और प्राचीन राजवंशों के प्रभाव क्षेत्र दर्शाए गए हैं।)

प्रस्तावना: रीवा की प्राचीन ऐतिहासिक यात्रा का आरंभ

रीवा संभाग, जो भारत के मध्य में स्थित है, न केवल अपनी विंध्याचल पर्वत श्रृंखला की प्राकृतिक सुंदरता के लिए बल्कि अपने गहन ऐतिहासिक महत्व के लिए भी प्रसिद्ध है। यह क्षेत्र सहस्राब्दियों से भारतीय सभ्यता की एक जीवंत धारा का साक्षी रहा है। इसका इतिहास केवल यशस्वी बघेल वंश तक ही सीमित नहीं, बल्कि इसकी जड़ें प्रागैतिहासिक काल तक जाती हैं, जहाँ आदिमानव के पहले पदचिह्न पाए गए।

इस विषय पर और गहराई से जानने के लिए, आप हमारे इस लेख को भी पढ़ सकते हैं: रीवांचल का प्राचीन इतिहास: प्रागैतिहासिक संस्कृति, पौराणिक आख्यान और मौर्योत्तर कालीन धरोहर
(https://acharyaasheeshmishra.blogspot.com/2025/05/blog-post_285.html?m=1)

समय के साथ, इस पवित्र भूमि ने वैदिक ऋचाओं की गूंज सुनी, चेदि महाजनपद की राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं को देखा, मौर्यों के साम्राज्य विस्तार का अनुभव किया, शुंगों की सांस्कृतिक निष्ठा को परखा, नागों की क्षेत्रीय शक्ति का अवलोकन किया, गुप्तों के स्वर्णयुग की आभा से यह आलोकित हुई, और कल्चुरियों, चंदेलों तथा प्रतिहारों जैसे पराक्रमी राजवंशों के उत्थान और पतन का मूक साक्षी बनी। इन राजवंशों ने न केवल यहाँ की राजनीतिक नियति को आकार दिया, बल्कि कला, स्थापत्य और धर्म के क्षेत्र में अपनी अमिट विरासत भी छोड़ी।

परंतु, रीवा का इतिहास केवल राजमहलों और विजय अभियानों तक ही सीमित नहीं है। इसकी आत्मा यहाँ के मूल निवासियों – कोल, गोंड जैसी वनवासी जनजातियों, और लोधी (लोध) व लवाना जैसे लोकजातीय समूहों की जीवंत संस्कृति में बसती है। इन समुदायों ने प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए इस भूमि की सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक संरचना को एक विशिष्ट पहचान दी। उनकी लोककथाएँ, नृत्य, पर्व और जीवन-शैली आज भी इस क्षेत्र की विरासत का अभिन्न अंग हैं। यह भूमि विभिन्न धर्मों और आस्थाओं का संगम स्थल रही है, जहाँ शैव, वैष्णव, शाक्त, जैन, बौद्ध और मध्यकालीन सूफी परंपराओं ने एक साथ विकसित होकर अद्भुत सर्वधर्म समभाव और सांस्कृतिक समन्वय का वातावरण निर्मित किया।

"रीवांचल की भूमि में दबी हर पुरातात्विक खोज, यहाँ की वनवासी संस्कृति की गूंज, और प्राचीन राजवंशों की गाथाएँ, भारतीय इतिहास के एक महत्वपूर्ण अध्याय को उजागर करती हैं।"

1. वनवासी सभ्यताएँ एवं स्थानीय समुदाय: रीवा की आत्मा के संरक्षक

रीवा की प्रारंभिक सभ्यता, संस्कृति और सामाजिक संरचना की नींव यहाँ की वनवासी और स्थानीय समुदायों ने रखी, जिन्होंने युगों से इस भूमि को अपना घर माना और इसकी पहचान को बनाए रखा।

इस विषय पर अधिक जानकारी के लिए पढ़ें: बघेलखण्ड का प्राचीन इतिहास: आदिम संस्कृति से राजवंशों के उदय तक - एक पुरातात्विक अन्वेषण

(<https://acharyaasheeshmishra.blogspot.com/2025/05/bglkhnd-prachin-itihhas.html?m=1>)

(यहां रीवा क्षेत्र की समृद्ध वनवासी संस्कृति का एक प्रतीकात्मक चित्रण देखा जा सकता है।)

- **कोल जनजाति:** विंध्य के मूल प्रहरी और सांस्कृतिक स्तंभ
कोल जनजाति को विंध्याचल क्षेत्र का प्राचीनतम निवासी होने का गौरव प्राप्त है। इनकी घनी बसाहट रीवा, सीधी, सिंगरौली, सतना और उमरिया जिलों में है। रीवा जिले के हनुमना, नईगढ़ी, मऊगंज, गुढ़, त्योंथर, सिरमौर, जवा और चोरहटा तहसीलों में इनकी प्रभावशाली उपस्थिति है। कोलगढ़ी (जवा तहसील), अतरैला और डभौरा ग्राम कोल संस्कृति के जीवंत केंद्र हैं। कोल समुदाय प्रकृति से जुड़ा रहा है; कृषि, शिकार और वनोपज संग्रहण इनकी आजीविका थे। इनके लोकगीत, लोकनृत्य (जैसे करमा, सैला) और मौखिक कथाएँ अमूल्य धरोहर हैं।
"कोल जनजाति की सांस्कृतिक परंपराएँ और प्रकृति के साथ उनका सामंजस्य, रीवांचल की पर्यावरणीय और सामाजिक विरासत का एक अभिन्न अंग हैं।"
- **गोंड जनजाति:** कबीलीय शासन, कलात्मकता और सीधी जिले से विशेष संबंध
गोंड जनजाति मध्य भारत की प्रमुख जनजाति है, जिसका ऐतिहासिक विस्तार सीधी, रीवा और वृहत्तर बघेलखंड में रहा है। प्रारंभिक काल में गोंडों ने छोटे-छोटे आत्मनिर्भर कबीलीय राज्यों की स्थापना की थी। वे प्रकृति और पितृ-पूजा में विश्वास रखते हैं, प्रमुख आराध्य देव बड़ा देव (बूढ़ा देव) हैं। उनकी गोंड पेंटिंग विश्वविख्यात है।
- **लोधी (लोध) समाज:** परिश्रमी कृषक और वीर योद्धा
लोधी समुदाय मध्यकाल में रीवा क्षेत्र में स्थायी रूप से बस गया और कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था का स्तंभ बना। इन्होंने कृषि का विकास किया और सामाजिक-राजनीतिक रूप से प्रभावशाली बने। इनकी एक गौरवशाली योद्धा परंपरा भी रही है।
- **लवाना समाज:** दूरगामी व्यापार और वाणिज्य के सूत्रधार
लवाना समुदाय ऐतिहासिक रूप से एक गतिशील, खानाबदोश और व्यापारी समुदाय रहा है। ये नमक, अनाज, कपड़े, मसाले आदि के व्यापार में संलग्न थे और विभिन्न संस्कृतियों तथा विचारों के वाहक बने।

2. बघेल वंश के पूर्ववर्ती राजवंश: रीवा के राजनीतिक क्षितिज के निर्माता

बघेल वंश के 13वीं शताब्दी में उदय से पूर्व, रीवा का भूभाग अनेक शक्तिशाली राजवंशों के शासन और उनकी सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र रहा।

अधिक जानने के लिए: रीवा का प्रारंभिक इतिहास: वनवासी सभ्यता, प्राचीन राजवंश और बहु-सांस्कृतिक विरासत (प्रागैतिहासिक से मौर्योत्तर)

(<https://acharyaasheeshmishra.blogspot.com/2025/05/rewa-prarambhik-kal.html?m=1>)

- **चेदि महाजनपद** (लगभग छठी शताब्दी ई.पू. - महाभारत काल): प्राचीन रीवा क्षेत्र शक्तिशाली चेदि महाजनपद का अंग था। चेदि नरेश शिशुपाल प्रसिद्ध शासक माने जाते हैं। उनकी राजधानी सुक्तिमती नगरी की पहचान रीवा जिले के इटहा ग्राम से की जाती है।
- **मौर्य वंश** (लगभग 322 ई.पू. - 185 ई.पू.) एवं **शुंग वंश** (लगभग 185 ई.पू. - 73 ई.पू.): सम्राट अशोक महान के काल में रीवा क्षेत्र बौद्ध धर्म के प्रसार का प्रमुख केंद्र बना। देउरकोठार के विशाल बौद्ध स्तूप, विहार और अशोककालीन ब्राह्मी शिलालेख इसके प्रमाण हैं।
"देउरकोठार के स्तूप और अभिलेख न केवल मौर्यकालीन कला और स्थापत्य के उत्कृष्ट उदाहरण हैं,

बल्कि वे सम्राट अशोक की धम्म-नीति और बघेलखण्ड में बौद्ध धर्म की गहरी जड़ों को भी प्रमाणित करते हैं।"

- नागवंशी (लगभग दूसरी से चौथी शताब्दी ईस्वी): मौर्यों के पतन के बाद नागवंशियों ने मथुरा, पद्मावती और मध्य भारत के कुछ हिस्सों में अपनी शक्ति स्थापित की। रीवा-सतना क्षेत्र से प्राप्त इनकी मुद्राएँ और शिलालेख उपस्थिति दर्शाते हैं।
- गुप्त राजवंश (लगभग तीसरी के अंत से छठी शताब्दी ईस्वी): गुप्त काल में रीवा क्षेत्र साम्राज्य का महत्वपूर्ण अंग था। देउरकोठार के बौद्ध स्तूपों का जीर्णोद्धार हुआ। बंधवगढ़ किला के आसपास से प्राप्त गुप्तकालीन अवशेष समृद्धि के प्रमाण हैं।
- कल्चुरी राजवंश (मुख्यतः लगभग 8वीं से 12वीं शताब्दी ईस्वी): त्रिपुरी (जबलपुर के निकट) के कल्चुरी राजवंश का रीवा और बघेलखंड पर गहरा प्रभाव रहा। ये शैव धर्म के महान संरक्षक थे। (यहां कल्चुरी कालीन कला का एक उत्कृष्ट नमूना, संभवतः बैजनाथ या नयागांव से, देखा जा सकता है।) प्रमुख केंद्र: गुर्गी (शैवाचार्य प्रभावशिव और प्रशांतशिव यहीं सक्रिय थे), चन्द्रहे, बैजनाथ, और नयागांव।
- चंदेल और प्रतिहार राजवंश (लगभग 8वीं से 13वीं शताब्दी ईस्वी): रीवा क्षेत्र इनकी सीमा पर स्थित होने के कारण इनके सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रभाव से भी अछूता नहीं रहा।

3. गुर्गी: विभिन्न धर्मों का सांस्कृतिक उत्थान केंद्र एवं गाजी मियां का मजार – एक अद्भुत समन्वय

गुर्गी-महसांव, प्राचीन और मध्यकालीन रीवा की आत्मा का दर्पण है, जहाँ विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों का अद्भुत संगम देखने को मिलता है।

अगला भाग: बघेल राजवंश का उदय: गहोरा से रीवा तक राज्य स्थापना, प्रशासन और सांस्कृतिक विरासत (<https://acharyaasheeshmishra.blogspot.com/2025/05/baghel-rajvansh-uday.html?m=1>)

(यहां गुर्गी से प्राप्त प्राचीन मंदिर के अवशेष या जैन तीर्थंकर की प्रतिमा का अंश देखा जा सकता है।)

गुर्गी मुख्यतः शैव धर्म का महान केंद्र रहा। यहाँ जैन धर्म की प्राचीन उपस्थिति के प्रमाण भी मिले हैं (जैसे तीर्थंकर पार्श्वनाथ की खंडित प्रतिमा)। कुछ विद्वान बौद्ध धर्म के प्रभाव की भी संभावना व्यक्त करते हैं। सबसे महत्वपूर्ण, यहाँ हजरत सैय्यद सालार मसऊद गाजी मियां का एक प्रतीकात्मक मजार शरीफ स्थित है, जहाँ प्रतिवर्ष उर्स (मेला) का आयोजन होता है, जिसमें हिन्दू-मुस्लिम सभी शामिल होते हैं। यह सांप्रदायिक सौहार्द का जीवंत उदाहरण है।

"गुर्गी का यह मजार विभिन्न आस्थाओं के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और भारतीय संस्कृति की समन्वयवादी प्रकृति का प्रतीक है, जो आज भी हमें प्रेरणा देता है।"

4. पुरातात्विक साक्ष्य एवं प्रमुख स्थल: अतीत के मौन गवाक्ष

रीवा और इसके आसपास का क्षेत्र पुरातात्विक दृष्टि से एक खजाना है।

अवश्य देखें: बघेलखण्ड का उदय और उत्कर्ष: व्याघ्रदेव के आगमन से मुगलकालीन रीवा तक (<https://acharyaasheeshmishra.blogspot.com/2025/05/bglkhnd-uday-utkarsh.html?m=1>)

- देउरकोठार: मौर्यकालीन बौद्ध स्तूप, विहार, अशोककालीन ब्राह्मी शिलालेख।
- गुर्गी-महसांव: कल्चुरीकालीन मंदिर, मूर्तियाँ, मठ, रेहुटा दुर्ग, जैन प्रतिमाएँ, गाजी मियां का मजार।
- इटहा: चेदि महाजनपद की राजधानी सुक्तिमती का संभावित स्थल।
- बैजनाथ: कल्चुरीकालीन शिव मंदिर।
- नयागांव: कल्चुरीकालीन शिव मंदिर और प्रतिमाएँ।

- बंधवगढ़: (उमरिया जिला, पूर्व रीवा रियासत) प्राचीन किला, गुफाएँ, गुप्तकालीन शेषशायी विष्णु, मघ एवं कल्चुरी अवशेष। (यहां बंधवगढ़ किले का एक विहंगम दृश्य देखा जा सकता है।)
- गोविंदगढ़: प्रागैतिहासिक शैल चित्र, प्राचीन झील, किला। (यहां गोविंदगढ़ या कैमूर शृंखला के किसी शैलाश्रय के प्रागैतिहासिक शैलचित्र देखे जा सकते हैं।)
- चन्द्रहे: (सीधी जिला) कल्चुरीकालीन शैव मठ।

समीपस्थ महत्वपूर्ण क्षेत्र: मऊगंज (अब जिला), और जवा तहसील के अन्य ग्राम जैसे कोलगढ़ी, अतरैया, डभौरा कोल संस्कृति के केंद्र हैं।

रीवा का प्रारंभिक काल: मुख्य अवधारणाएँ एवं सांस्कृतिक तत्व

इस पूरे विवेचन से रीवा के प्रारंभिक काल की कुछ मुख्य अवधारणाएँ और सांस्कृतिक तत्व उभरकर सामने आते हैं:

- वनवासी सभ्यताएँ: कोल और गोंड जैसी प्राचीन जनजातियाँ, जिनकी जीवनशैली प्रकृति से अभिन्न रूप से जुड़ी थी, और जिन्होंने रीवा की सांस्कृतिक नींव रखी। उनकी लोककलाएँ और मौखिक परंपराएँ आज भी जीवंत हैं।
- पूर्ववर्ती राजवंश: चेदि (महाभारतकालीन), मौर्य (अशोककालीन देउरकोठार), नाग, गुप्त (स्वर्णयुगीन कला), और कल्चुरी (गुर्गी के शैव मठ) जैसे राजवंशों ने रीवा की राजनीतिक, धार्मिक और कलात्मक विरासत को समृद्ध किया।
- बहु-सांस्कृतिक संगम: शैव, वैष्णव, शाक्त, जैन, बौद्ध और सूफी परंपराओं का शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, जैसा कि गुर्गी में परिलक्षित होता है, रीवा की सांस्कृतिक जीवंतता का उदाहरण है।
- पुरातात्विक धरोहर: देउरकोठार के स्तूप, इटहा की प्राचीनता, बंधवगढ़ का किला, गोविंदगढ़ के शैलचित्र, और गुर्गी के मंदिर अवशेष रीवा के हजारों वर्षों के इतिहास के मूक साक्षी हैं।

रीवा की प्राचीन विरासत की कुछ झलकियाँ:

(यहां देउरकोठार के मौर्यकालीन बौद्ध स्तूपों का एक दृश्य देखा जा सकता है। साभार: ASI/संबंधित स्रोत)
(गुर्गी के पुरातात्विक महत्व को दर्शाता एक उदाहरण वीडियो यहां देखा जा सकता है - YouTube VIDEO_ID: Qc7oU4P4c0A)

अध्ययन स्रोत एवं संदर्भ ग्रंथ (विस्तारित)

रीवा के प्रारंभिक काल के गहन अध्ययन के लिए निम्नलिखित स्रोत महत्वपूर्ण हैं:

- प्राथमिक पुरातात्विक एवं साहित्यिक स्रोत: गोविंदगढ़ व कैमूर के शैलाश्रय, नदी घाटियों से प्राप्त पाषाण उपकरण, स्कंद पुराण (रेवा-खंड), रामायण, महाभारत, बौद्ध एवं जैन ग्रंथ, देउरकोठार व गुर्गी के अभिलेख, तथा गुर्गी, बंधवगढ़ आदि से प्राप्त मूर्तियाँ व मंदिर अवशेष।
- आधुनिक शोध एवं प्रकाशन (कुछ प्रमुख उदाहरण):
 - सिंह, जीतन. "रीवा राज्य का दर्पण".
 - शुक्ल, डॉ. हीरा लाल. "बघेलखण्ड की संस्कृति और भाषा".
 - श्रीवास्तव, प्रो. राधेशरण. "विंध्य क्षेत्र का इतिहास".
 - वाजपेयी, श्रीमती मधुलिका. "मध्य प्रदेश में जैन धर्म का विकास".
 - अशरफी, जिया अली खाँ. "किताब मरदाने खुदा".
 - भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) की रिपोर्टें।
 - Bajpai, K.D. "History and Culture of Madhya Pradesh".

- Trivedi, H.V. "Corpus Inscriptionum Indicarum, Vol. III: Inscriptions of the Kalachuri-Chedi Era".
-
- वेबसाइट एवं अन्य डिजिटल स्रोत: जिला रीवा व मऊगंज की आधिकारिक वेबसाइटें, Villageinfo.in, विकिपीडिया (https://en.wikipedia.org/wiki/Rewa_district, [https://en.wikipedia.org/wiki/Rewa_\(princely_state\)](https://en.wikipedia.org/wiki/Rewa_(princely_state)), https://en.wikipedia.org/wiki/Mauganj_district), मध्य प्रदेश पर्यटन विकास निगम (MPTDC) की वेबसाइट।

निष्कर्ष: एक बहुआयामी विरासत का पुनरावलोकन और भविष्य की दिशा

रीवा का बघेल-पूर्व इतिहास एक बहुरंगी चादर के समान है, जिसके प्रत्येक धागे में एक अलग कहानी, संस्कृति और परंपरा गुंथी हुई है। यह क्षेत्र चैदि, मौर्य, नाग, गुप्त और कल्चुरी जैसी महान सत्ताओं की प्रशासनिक क्षमता, कलात्मक संरक्षण और धार्मिक नीतियों का क्रियान्वयन स्थल रहा। इन राजवंशों ने भव्य मंदिर, विशाल स्तूप, सुदृढ़ किले और कलात्मक प्रतिमाएँ निर्मित कर स्थायी विरासत छोड़ी। इसके समानांतर, यहाँ की भूमि कोल, गोंड, लोधी और लवाना जैसी जनजातीय और जातीय संरचनाओं की जीवंत सामाजिक चेतना से सिंचित होती रही। गुर्गी जैसे स्थल विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। रीवा की यह अद्भुत विविधता, समावेशी सांस्कृतिक विरासत और सह-अस्तित्व की लंबी परंपरा ही इसकी वास्तविक धरोहर और शक्ति है। इस बहुमूल्य धरोहर का संरक्षण, संवर्धन और गहन अध्ययन आज अत्यंत आवश्यक है।

कॉपीराइट एवं उपयोग अधिकार

© 2024 आचार्य आशीष मिश्र (शोध एवं संपादन)। सर्वाधिकार सुरक्षित।

यह प्रस्तुति ज्ञान के प्रचार-प्रसार एवं शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है। सामग्री का उपयोग गैर-व्यावसायिक, शैक्षिक, और शोधपरक गतिविधियों के लिए, "आचार्य आशीष मिश्र" (<https://acharyaasheeshmishra.blogspot.com>) के उचित श्रेय के साथ किया जा सकता है।

अस्वीकरण: इस आलेख में प्रस्तुत जानकारी विभिन्न ऐतिहासिक स्रोतों पर आधारित है। तिथियों और व्याख्याओं में भिन्नता संभव है। अधिक जानकारी के लिए हमारे ब्लॉग पर प्रारंभिक रीवा

(<https://acharyaasheeshmishra.blogspot.com/search/label/प्रारंभिक%20रीवा>), वनवासी संस्कृति (<https://acharyaasheeshmishra.blogspot.com/search/label/वनवासी%20संस्कृति>), तथा प्राचीन राजवंश (<https://acharyaasheeshmishra.blogspot.com/search/label/प्राचीन%20राजवंश>) लेबल देखें।

ईमेल संपर्क: shriasheeshacharya@gmail.com

हमारी विस्तृत लेख श्रृंखला

रीवा और बघेलखण्ड के इतिहास की विभिन्न कड़ियों को जानने के लिए हमारी श्रृंखला के इन महत्वपूर्ण लेखों को अवश्य पढ़ें:

- रीवा: संग्राम-विलय (1857 का संग्राम और भारतीय संघ में विलय की ऐतिहासिक गाथा।) <https://acharyaasheeshmishra.blogspot.com/2025/06/rewa-adhunik-bharat-bhag.html?m=1>

- बघेलखण्ड: मुगल-आधुनिक काल (मुगल काल से आधुनिक भारत के निर्माण तक बघेलखण्ड का महत्वपूर्ण सफर।)
<https://acharyaasheeshmishra.blogspot.com/2025/06/bgikhnd-mughal-adhunik.html?m=1>
- रीवा: राजवंश एवं संगम (विभिन्न राजवंशों का अमिट प्रभाव और संस्कृतियों का अद्भुत संगम।)
<https://acharyaasheeshmishra.blogspot.com/2025/06/blog-post.html?m=1>
- रीवा का विलय (भाग-२) (रियासत के भारतीय संघ में विलय की विस्तृत और निर्णायक कहानी।)
https://acharyaasheeshmishra.blogspot.com/2025/06/rewa-adhunik-bharat-bhag_02094528041.html?m=1
- रीवा: आरंभिक-लेख (परिचय) (इस विस्तृत लेख श्रृंखला का परिचयात्मक लेख, प्रारंभिक काल पर केंद्रित।)
<https://acharyaasheeshmishra.blogspot.com/2025/06/rewa-prarambhik-kal.html?m=1>
- आगामी लेख: रीवा की कला और स्थापत्य (जल्द ही प्रकाशित होगा, जिसमें क्षेत्र की कलात्मक धरोहर पर चर्चा होगी।)
(इसके लिए लिंक अभी उपलब्ध नहीं है।)